BA (Hindi)
Part-II Paper-3

* प्रयोगवाद और नयी कविता में अन्तर स्पष्ट करें।

⇒ नयी कविता एवं प्रयोगवाद में निम्नलिखित मूलभूत अन्तर है —

① प्रयोगवाद की कालावधि सन् 1943 से 1950 ई० तक मानी जाती है। जबकि नयी कविता की कालावधि सन् 1950 से सन् 1960 ई० तक मानी जाती है।

② 2. प्रयोगवादी कविता में परंपरा से विद्रोह के रूप में प्रयोग तथा अन्वेषण का मार्ग स्वीकार किया था, पर नयी कविता का आन्दोलन किसी परम्परा के विद्रोह स्वरूप नहीं हुआ था। नयी कविता स्वाभाविक गति से आगे बढ़ी बढ़ रही थी जबकि प्रयोगवादी कविता प्रगतिवाद की प्रतिक्रियास्वरूप पनपी थी

3. नयी कविता में आस्था के स्वर मुखरित हैं, परंतु प्रगतिवादी कविता में अपने संघर्ष के प्रति आस्था बहुत कम दिखाई पड़ती है।

4. प्रयोगवाद और नयी कविता में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि प्रयोगवाद द्वन्द्व और प्रतिक्रिया की कविता है जबकि नई कविता संश्लेषण और सामंजस्य की कविता है।

5. अज्ञेय के शब्दों में लोकगीतों या लोकधुनों की ओर झुकाव नयी कविता की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है परंतु प्रयोगवादी कविता में यह प्रवृत्ति अंशतः है

6. प्रयोगवादी कविता में वैयक्तिकता के स्वर तीव्र हैं परंतु नयी कविता वैयक्तिकता और सामाजिकता में सामंजस्य स्थापित करती है। नई कविता का अहं भाव भी समाजोन्मुखी है परंतु प्रयोगवादी कविता का अहं भाव आत्म केन्द्रित है।

Scanned with CamSc

7. नयी कविता के कवि का झुकाव विभिन्न वादों से परे अपनी रचना धर्मिता एवं युग चेतना की ओर है, परन्तु प्रयोगवादी कवियों का झुकाव साहित्य एवं सामाजिक मान्यताओं सम्बन्धी नये प्रयोगों की ओर है।

8. नयी कविता आधुनिकता बोध की संवाहिका रही है। वह समय के साथ बदलते हरेक आधुनिक मूल्यों को अपनाते हुए चलती है। उसे समसामयिकता का ख्याल अधिक रहता है इसलिए उसका फलक प्रयोगवाद से अधिक हो जाता है।

9. नयी कविता को प्रयोगवाद की अगली कड़ी उसका अधिक सुलझा हुआ रूप कह सकते हैं।

इस प्रकार प्रयोगवाद और नयी कविता में यही प्रमुख अन्तर है।

डॉ. अविनाश रंजन
हिन्दी विभाग
आर. एन. कालेज हाजीपुर
वैशाली

Scanned with CamSc